The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

छात्र–छात्राओं में अपव्यय व अवरोधन की समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्वेता सिंह
एम. ए. शिक्षाशास्त्र, बी.एड.

डा0 सुशील कुमार
असि0 प्रोफेसर
हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद

सारांश –

शिक्षा मानव विकास की अधारशिला है। यह मनुष्य को समाज का एक उपयोगी अंग बनाने की प्रक्रिया है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक, शारीरिक आदि का समुचित विकास करती है। सक्षेप में कहें तो शिक्षा मनुष्य का सर्वागीण विकास करने में सहायह है, इसलिए मानवता और संस्कृति के विकास में शिक्षा अत्यत महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाय पाकर सूरजमुखी का पुष्प खिल उठता है तथा सूर्यास्त होने पर मुरझा जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा पाकर प्रत्येक व्यक्ति सूर्यमुखी के पुष्प की तरह खिल उठता है तथा शिक्षित होने पर अंधकार में डूब जाता है। हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ है जिनमें से प्राथमिक शिक्षा को इतिहास तथा उसमें उत्पन्न हुई समस्याएँ अत्यन्त प्राचीन है। वर्तमान प्रारम्भिक शिक्षा का प्रारम्भ इंसाई मिशनरियों और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने किया था परन्तु इसकी ठीक–ठीक व्यवस्था 1835 ई0 के एक्ट में हुई। इससे पहले 1813 के चार्टर एक्ट में कुछ सिफारिश की गई जिसमें कहा गया कि शिक्षा पर प्रतिवर्ष 1,00,000/– रूपयें खर्च किया जाए तथा शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी–क्षेत्रीय भाषा हों।

1854 के बुड के घोषणा–पत्र में कहा गया कि प्राथमिक विद्यालय में संख्यात्क वृद्धि भी की जाए, शिक्षण नीति सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव 1904 में कहा गया कि प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक तथा संख्यात्मक दोनों प्रकार से ही वृद्धि की जाए। इस प्रकार विभिन्न घोषणा

पत्रों एक्टों में शिक्षा से सम्बन्धित अलग–अलग सुधार किए गए जिनमें प्राथमिक शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया गया प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की नींव है अत– इसमें अत्यधिक सुधार की आवश्यकता भी है। माध्यमिक शिक्षा प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली की सफलता की प्रगति आधारित है। साक्षरता की दृष्टि से भारत की स्थिति में अभी ज्यादा सुधार नही हुआ है। 1981 की जनसंख्या के अनुसार, जनसंख्या का केवल 36.2 प्रतिशत भाग ही साक्षर था।

कुंजी शब्दः– *अपव्यय, अवरोधन, मानव विकास, शिक्षा ।*

संविधान के अनुच्छेद 21(ए) के तहत यह प्रावधान किया गया कि 19 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा हो किन्तु यह लक्ष्य अभी तक प्राप्त नही किया गया है और न ही भविष्य में प्राप्त किये जाने की कोई आशा है इसका एक मुख्य कारण विद्यालयों में अपव्यय और अवरोधन की समस्या का दृष्टांत होना है। अतः यह एक विचारणीयः समस्या के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है इसलिए इस समस्या से निपटने हेतु सरकार को विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को संचालित करने की आवश्यकता है।

2014 के अनुसार–

अवस्था	लड़के	लड़कियाँ
प्राथमिक	60.30	71.36
माध्यमिक	20.43	25.95
उच्च	75.09	84.74

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक अपव्यय व अवरोधनकी समस्या लड़कियों की शिक्षा में है, इसे दूर करने के लिए सर्वप्रथम इसके कारणों को पता लगाने हेतू–प्रबन्धन और सर्वक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :–

शिक्षा के प्रचार में जहाँ अन्य बाधाएँ सामने आती है, वहीं अवरोधन तथा अपव्यय की समस्याएँ प्रत्येक स्तर पर प्रमुख रही है। शिक्षा में जब अपव्यय की बात होती है तो पाया जाता है कि

प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन अधिक है। हमारी प्राथमिक–शिक्षा के लिए एक गम्भीर समस्या है, जब तक हम इस समस्या से निजात नही पाते तब तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का हमारा पूरा नहीं हो सकता।

समस्या कथन

छात्र–छात्राओं में अपव्यय व अवरोधन की समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

अपव्यय का अर्थ – अपव्यय का आश्य बालक का अपनी कक्षा पूरी किये बिना ही शिक्षा छोड़ देना है जिससे बालक पर खर्च किया गया धन, समय और श्रम व्यर्थ हो जाता है। "हर्टोग–कमेटी" के अनुसार, "प्राथमिक–शिक्षा" पूरी करने से पहले किसी स्तर पर स्कूल छोड देना ही अपव्यय है।"

अवरोधन का अर्थ – अवरोधन से तात्पर्य कक्षा में असफल होने से किया जाता है अर्थात जब छात्र एक ही छात्र बार–बार पढ़ाई के लिए ठहरता। फेल हो जाता है या अनुत्तीर्ण हो जाता है।

प्राथमिक–षिक्षा में अपव्यय व अवरोधन की स्थितिः–

NCERT द्वारा प्रकाशित Encyclopedia of Indian Education Volume 2 में कहा गया है कि शोध अध्ययनों से निरीक्षण कर यह पाया गया है कि 20 प्रतिशत बच्चे ग्रामीण इलाको में विद्यालय से बाहर तथा 25 प्रतिशत बच्चे शहरी क्षेत्र में विद्यालय से बाहर है। ये सभी बच्चे बालश्रम में संलिप्त है ताकि उन्हें कुछ आमदनी हो सकें।

	कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चें	ड्रॉप आउट बालक–बालिकाओं की संख्या
बालक	610148	103881
बालिका	544894	151028
कुल	1155042	254909

अपव्यय व अवरोधन के कारणः–

- सामाजिक रूप से माता–पिता का पिछड़ापन।
- माता–पिता का अशिक्षित होना और शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच का होना।
- बालिकाओं की शिक्षा हेतु रूढ़िवादी विचारधारा का होना।
- छात्रों की पढाई में रूचि न होना।
- माता –पिता का आर्थिक रूप से कमजोर होना।
- अध्यापक का रंगरूप, जाति, लिंग आदि के प्रति भेदभाव रखना।
- उच्च–शिक्षा हेतु जिज्ञासा न होना।

अध्ययन का उद्देष्यः–

- शहरी विद्यार्थियों में अपव्यय का अध्ययन करना।
- ग्रामीण विद्यार्थियों में अपव्यय का अध्ययन करना।
- शहरी विद्यार्थियों में अवरोधन का अध्ययन करना।
- ग्रामीण विद्यार्थियों में अवरोधन का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में अपव्यय का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में अवरोधन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाः–

- शहरी विद्यार्थियों में अपव्यय में कोई सार्थक अंतर नही है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों में अपव्यय में कोई सार्थक अंतर नही है।
- शहरी विद्यार्थियों में अवरोधन में कोई सार्थक अंतर नही है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों में अवरोधन में कोई सार्थक अंतर नही है।
- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में अपव्यय में काई सार्थन अंतर नही है।
- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में अवरोधन में काई सार्थन अंतर नही है।

शोध–समस्या का सीमाकंनः–

शोध प्रबन्धन प्राथमिक विद्यालयों में चौथी और पाँवची कक्षा के उन 50 छात्र–छात्राओं पर किया जो विद्यालय छोड़ चुके है तथा 50 उन पर किया जो एक ही कक्षा में बार–बार अनुत्तीर्ण हुए है। इस अध्ययन का क्षेत्र मवाना तहसील तक ही सीमित रखा गया है।

	क	ख	ग	योग	प्रतिशत
1992–93	15	11	23	49	
अपव्यय	2	1	3	6	12.2
अवरोधन	4	2	5	12	24.4
1993–94	18	13	17	48	
अपव्यय	1	1	2	4	8.23
अवरोधन	3	2	2	7	14.5

प्राथमिक विद्यालय के कुछ छात्र–छात्राएँ–273

प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं में अपव्यय – 53.05

प्राथमिक विद्यालय के कुछ छात्र–छात्राएँ में अवरोधन– 81.04

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि प्राथमिक विद्यालय में अपव्यय की दर 53.05 प्रतिशत और अवरोधन की दर 81.04 प्रतिशत है।

अपव्यय व अवरोधन को दूर करने का सुझाव

- सहशिक्षा
- प्रशिक्षित अध्यापक
- बालविवाह पर रोक
- विद्यालय की उचित व्यवस्था
- रूचिपूर्ण पाठ्यक्रम
- सरल परीक्षा प्रणाली

- अंशकालिक विद्यालय की व्यवस्था
- मिल–डे–मील की व्यवस्था
- शिक्षा को रटन्त प्रणाली से मुक्त कर समझाने पर अधिक जोर देना
- खेल–विधि, खोजविधि, किण्डरगार्डन, ह्यूरिस्टिक, प्रयोगविधि आदि विधियों के माध्यम से शिक्षा देना।

उपरोक्त सुझावों के द्वारा में अपव्यय और अवरोधन की समस्या को कम किया जा सकता है और कमजोर वर्गो के बच्चों को नामाकंन बढ़ाने तथा शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया जा सकता है।

'कोठारी आयोग' 1964–66 ने शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन की समस्या को दूर करने के लिए विभिन्न साधन दियें जिनमें से तीन साधन अनिवार्य है–

1. छठी–सातवी श्रेणी को संपूर्ण इकाई समझना चाहिए।
2. एक वर्षीय पूर्व विद्यालयी शिक्षा आरम्भ करना।
3. प्राथमिक स्तर पर खेल–विधियों को अपनाना चाहिए तथा माता–पिता की शिक्षा का प्रभावशाली प्रबन्धन होना चाहिए।

अतः उपरोक्त सुझाव पर यदि विचार किया जाए तो विद्यालय में अपव्यय व अवरोधन की समस्या को दूर किया जा सकता है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र से हम विभिन्न निष्कर्ष पर पहुँच सकते है जो निम्नलिखित प्रकार से है–

- माता–पिता की शिक्षा का बालक की शिक्षा पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव देखा जाता है, अतः माता–पिता का शिक्षित होना अनिवार्य है।
- अध्यापकों को पढ़ाने के लिए मनोवैज्ञानिक विधियों का उपयोग करना चाहिए तथा छात्र मनोदशा की उपर्युक्त समक्ष होनी चाहिए।
- छात्र–छात्राओं को विद्यालय का उचित वातावरण मिलें तथा एक विद्यालय उन्हें अपने परिवार की तरह लगें।

- ❖ विभिन्न प्रकार की रूढ़िवादी धारणाओं का अन्त हो तथा प्रत्येक मनुष्य शिक्षा के महत्व को समझे।
- ❖ प्रत्येक प्रकार के भेदभाव (रंग, नस्ल, जाति, धर्म, स्थान, लिंग आदि) से मुक्त समाज होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:–

- ➢ कोठारी आयोग रिपोर्ट 1964–66
- ➢ दैनिक जागरण
- ➢ सक्सैना, एन0आर0 स्वरूप (2006)
- ➢ राय पी0एन0 "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।
- ➢ सिंह डॉ0 रामपाल, शर्मा, डॉ0 ओ0पी0–शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/06

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

श्वेता सिंह एवं डा0 सुशील कुमार

for publication of research paper title

छात्र–छात्राओं में अपव्यय व अवरोधन की समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com